LEARNING

Date 17/04/2020

शाब्दिक या मौखिक सीखना
(Verbal Learning)

शाब्दिक सीखना (verbal learning) से तात्पर्य ऐसे सीखना से होता है जिसमें व्यक्ति अक्षरों अक्षरों से बने सार्थक, अर्थहीन शब्दों, वाक्यों चिह्नों के अर्थों को सीखता है तथा उसके आशय को समझता है। इस तरह का सीखना मुख्य रूप से मनुष्य में देखा जाता है। इसीलिए इसे मानव-सीखना (human learning) भी कहते हैं। मार्गन तथा किंग (Morgan & King 1956) के अनुसार "मौखिक-सीखना वह सीखना है जिसमें "शब्द उद्दीपनों या प्रतिक्रियाओं के रूप में निहित होते हैं।" चैपलिन (Chaplin 1975) के अनुसार "मौखिक-सीखने का तात्पर्य सूचियों या शब्दों, निरर्थक पदों, आदि के सीखने से है।

मौखिक-सीखना के अन्तर्गत निरर्थक पदों का व्यवहार सामग्री के रूप में अधिक किया जाता है, ऐसे पदों या शब्दों को बनाने की दो विधियाँ हैं।
(i) तीन अक्षरों से पद या शब्द का निर्माण किया जाता है जिसके किनारे के दोनों अक्षर व्यंजन (consonant - c) होते है और बीच में का अक्षर स्वर (vowel - v) होता है ये तीनो अक्षर एक दूसरे से असम्बद्ध होते हैं। इसलिए इनसे निरर्थक पद का ही निर्माण होता है। (ii) इस विधि में तीनो अक्षर व्यंजन होते हैं और इस तरह बनाये जाते हैं कि उनके बीच कोई सम्बन्ध कायम न हो सके। इस दिशा में प्रथम प्रयास इबिंगहॉस (Ebbinghaus 1885)

Page No.

ने किया। उन्होंने इस मौखिक सामग्री (Verbal material) पर अधिक बल दिया, क्योंकि निरर्थक पदों पर पूर्व अनुभव ~~(___)~~ (Past experience) पूर्व साहचर्य (Past association) या स्मरण-प्रतिमा memory image) का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इसलिए इस सामग्री की कठिनाई सभी व्यक्तियों के लिए समान होती है। अतः इस सामग्री के आधार पर किसी व्यक्ति के सीखने या याद करने की योग्यता की वास्तविक जानकारी अधिक ~~__~~ सम्भव है। अंडरउड तथा शुल्ज (Underwood & Schulz 1960) के अनुसार निरर्थक पदों के साहचर्य-मूल्य का मूल्यांकन सार्थक शब्दों की तुलना में अधिक आसान है

मौखिक सीखना भी कई कारको पर आधारित है। व्यक्ति की बुद्धि, रुचि, अभ्यास आदि वैयक्तिक कारकों के साथ-2 सीखने की विधियों का प्रभाव भी इस पर गहरे रूप से पड़ता है।

Nishikant Jaiswal
Assistant Professor
Dept. of Psychology
Dr. LKVD College Tajpur
Samastipur

Scanned with CamScanner